Saarth E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

“पर्यावरण परिवेश: समस्याएँ और समाधान अंतर्गत पर्यावरण संरक्षण में वृक्षो का योगदान - संस्कृत साहित्य संदर्भ ”

प्रो. भारतसिंह एस. डामोर*

उपक्रम : (Preparation)

परमात्मा से विस्तारित तथा संचालित त्रिगुणात्मिका प्रकृति ही सृष्टि के udbhiउद्भव पालन और लय का मूल हेतु है | 'यथा ब्रह्माण्डे तथा पिंडे|' इस मत के अनुसार पंचमहाभूतों से निर्मित व्यक्त प्रकृति से ही उदभिज, स्वेंदज, अंडज, योनिज आदि सभी जीवसृष्टि का निर्माण होता हैं | योगेश्वर श्रीकृष्ण के मतानुसार परमात्मा की महद् ब्रह्मरूपा मूल प्रकृति ही सभी प्राणीओं का उद्भव स्थान है, तथा परमात्मा बीजरूप पिता है, जैसे की ------

‘मम योनि: महद्ब्रह्म तस्मिन्न गर्भं दधाम्यहम् |
सम्भवः सर्वभूतानां ततो भवति भारत ||
सर्व योनिषु कौन्तेय मूर्तय संभवन्ति या: |
तासां ब्रह्ममहत योनिरहं बीजप्रद: पिता ||’ (गीता १३-३,४)

महाकवि कालिदास ने भी अभिज्ञान शाकुंतल की प्रस्तावना में जल, वायु, अग्नि, आदि पर्यावरण के तत्वों का अभिवादन करते हुए कहा है की – प्रत्याक्षिभि: तनुभि: अवतु व: ताभि: अष्टाभि: इश: | शताब्दीओं से जीवन तथा पर्यावरण की परस्पर निर्भरता भारतीय पारम्पारिक विचारधारा की विशेष पेहचान बन गई है | पर्यावरण सभी प्राणीओं के जीवन का अभिन्न अंग ही है | प्रत्येक जीवों की अनुक्रियाओं को प्रभावित करने वाली समस्त भौतिक तथा जैविक परिवेश का संयोग को पर्यावरण नाम से जाना जाता हे | यही जिवसृष्टि का मंडल है | जीवों को जल,थल,वायु और आकाश की जरुर पड़ती है | अत: जीवमंडल में थलमंडल, जलमंडल, और वायुमंडल का भी समावेश होता हैं | ये तीनो परस्पर पूरक है, तथा इन तीनो में से एक यदि प्रभावित होता है तो दुसरे को भी प्रभावित करता है|

---

*प्रो. भारतसिंह एस. डामोर,संस्कृत विभागाध्यक्ष ,एस.के.यु.बी.समिती आर्ट्स एवं श्रीमतीएन.सी. झवेरी कॉमर्स कॉलेज पिपलीया ता. वाघोडिया, जि. वड़ोदरा.

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

इन तीनों मंडलों की उपलब्ध उर्जा का समुचित प्रयोग ही पर्यावरण संरक्षण है तथा दुरूपयोग प्रदूषण कहलाता है|

(1) पर्यावरण प्रदूषण : (Environmental Pollution) प्रत्येक जीवों को जीने के लिए जल, वायु और अन्न की आवश्यकता होती हैं | भोगग्रस्त मानवसमाज ने अपने निजि स्वार्थ के लिये पर्यावरण को अधिक प्रदूषित कर दिया है| यांत्रिक युग की नविनतम खोजें मानवसमाज के लिये अत्यंत उपकारक है, किन्तु पर्यावरण के लिये अधिक हानिकारक है | आधुनिक काल में यातायात के साधनों का उपयोग अत्यंत सरल और सुखदायक है, लेकिन वही वाहनों ने धुम्रगोटा छोड़कर तथा भयंकर ध्वनिओं से भस्मासुर का स्वरूप धारण किया है | इसलिए महानगरों का निवास मनुष्यों के लिए महाकाल जैसा विनाशक बना है | शहेरीकरण और औधोगिकरण जैसी अर्वाचीन विकासयात्रा से प्रदूषण का प्रभाव कई गुना बढ़ गया है | प्राकृतिक सम्पदा लुप्त हो गई है तथा स्वच्छ अन्न, जल तथा वायु मिलना कठिन है | पर्यावरण को प्रदूषण से बचाने के लिए वृक्षों का बहोत बड़ा योगदान है इसलिए सदा वृक्ष संपदा रक्षणीय है | प्रदूषित पर्यावरण से हीरत्नगर्भा वसुंधरा आज अनेक आपत्तिओं से ग्रस्त है | पर्यावरण की चिंता किसी व्यक्ति या देश विशेष की नहीं है अपितु यह वैश्विक समुदाय की जिम्मेदारी है | इस आपदाओं से उबरने के लिए सभी धरावासीओं को मिलकर एकसाथ प्रयत्न करना चाहिए | इस समस्या के समाधान हेतु आंतरराष्ट्रीय संमेलन तथा संगोष्ठिओं का आयोजन किया जाता है | धरती पर बढ़नेवाले प्रदूषण के दुष्प्रभावों के संरक्षण हेतु १९९७ में जापान के क्योटो नगर में एकत्रित विश्व के सभी पर्यावरणविदों ने पृथ्वी पर बढ़नेवाले कार्बन डायोक्साइड के प्रमाण को संतुलित करने का सामूहिक निर्णय लिया था| इस सभा को क्योटो प्रोटोकोल नाम दिया गया था | उसके आंतरराष्ट्रीय करार के मुताबिक प्रत्येक प्राध्योगिक देश अपने वहाँ ग्रीनहाउस गेसों का उत्सर्जन के प्रमाण को कम करेंगे, किन्तु उसका नतीजा आज भी शून्य है |

(2) पर्यावरण संरक्षण में संस्कृत साहित्य का योगदान: (Contribution) पर्यावरण जागृति आधुनिक विज्ञान है यह लोकमत अनुचित हैं, क्योंकि भारतीय धर्मशास्त्रों, पुराणों,

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

रामायण, महाभारत, आयुर्वेद, चरकसंहिता, वास्तुशास्त्र आदि ग्रंथो की विचारणा से स्पष्ट होता है कि हमारे प्राचीनकाल के ऋषि-मुनि भी पर्यावरण संरक्षण के लिए सर्वदा चिंतित और चिंतनशील थे | उनके मतानुसार पर्यावरण संरक्षण में वृक्षों का बहोत बड़ा योगदान है | वृक्षारोपण, वृक्षसंवर्धन तथा संरक्षण आदि कार्य हमारा परम कर्तव्य तथा मानवधर्म है | वृक्षसंवर्धन और संरक्षण ही भारतीय संस्कृति है | धर्मशास्त्रों के मतानुसार उद्भिज-वनस्पति सृष्टि का प्रारंभिक सर्जन है | जैसे कि 'एकार्णवे पुरजातेनष्टे' स्थावरजंगमे | सर्वेषामेव वृक्षाणामादिरोहः प्रकीर्तिताः || ब्रह्मा तमसृजत्पूर्व तत्पश्च्चात असृजत प्रजा| (स्कन्दपुराण – २.४.१२,१०) प्राकृतिक संप्रदायों में वृक्ष सर्वोपरि है अतः वृक्षों को देव माना जाता है | निरंतर प्रदान करनेवालों को ही देव कहा गया है | वृक्षों हमें सदा लाभान्वित करते रहेते है | वृक्षों देवी गुणों का भंडार है; इसलिए वृक्ष देवता की पदवी से सन्मानित है | स्वयं परमात्मा त्रिगुणों के रूप में प्रकृत्ति में विभक्त है – इश्वरः सर्व वृक्षाणा कृपया वृक्षमाश्रित | (वृक्षशास्त्र – ६/२४७/२४) उर्जा, उष्मा तथा मेघ सेही वृक्ष फलित होते हैं, तथा उसकीं आसपास की सभी चीजों को मनुष्य तथा पर्यावरण को प्रदान करते है | ऐसा ऋग्वेद में स्पष्ट बताया है | औषधिओं, वृक्षों तथा भूमि में अपने आप अनंत शक्तिओं का भंडार भरा पड़ा है, जो कभी समाप्त नहीं होता है, ऐसा स्पष्ट उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है जैसे की-

' तपौषधिः च वनिनः च भूमिः च विश्वधायसं विभाति ' | (ऋग्वेद ७/४/५)

वृक्षों को पृथ्वी का अम्बर और आवरण कहा है | वृक्षों और वनों से ही पृथ्वी सुशोभित रहती है | यजुर्वेद के ऋषि तो वृक्षों को बार बार अभिवादन एवं प्रणाम करते हुए कहते है की 'वृक्षविहीन जीवन की कल्पना भी नहीं हो सकती|' वृक्षों प्राणीओं और पर्यावरण के लिए प्रमुख आधार है | यजुर्वेद १६/१६/२० में ऋषि वृक्षों के प्रति अनन्य श्रध्धा और सन्मान का भाव व्यक्त करते है |

(3) वृक्षारोपण तथा संवर्धन की प्रेरणा (Inspiration) प्राचीनकाल में ऋषि-मुनि अपने आश्रम की आसपास वृक्षों और लत्ताओं को पाल पोसकर बड़े करते थे| वृक्ष संवर्धन को वे पुण्यकार्य मानते थे और उसे अधिक महत्व देते थे| अभिज्ञान शाकुंतल में कण्व ऋषि ने अपनी पुत्री शकुंतला को वृक्ष संवर्धन की जिम्मेदारी सोंपी थी, आभूषण प्रिय होने पर भी

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

शकुंतला पुष्प चुनती नहीं थी| शिवपुराण में वृक्षारोपण की प्रेरणा और प्रोत्साहन देते हुए बताया है की –'अतीतानागतान सर्वान् पितृवंशास्तु तारयेत | कान्तारे वृक्षरोपी यस्तास्याद् वृक्षास्तु रोपनेत् ||'(शिवपुराण उ सं– १२/१७) अर्थात् विराना, उजाड़, तथा गूढ़ स्थानों में वृक्षारोपण करने वाला अपनी भुतकालीन तथा अपनी भावि पीढ़ीओं का उद्धार करते है | इसलिए वृक्षारोपण अवश्य करना चाहिए | लिखित संहिता में वृक्षारोपण के फल के बारे में बताया है की – ' तत्लोकान् प्राप्नुयान्मत्र्य: पादपाना प्ररोपेण ' यानि की स्वर्गप्राप्ति के लिये वृक्षारोपण करना जरुरी है | गोदान और भूमिदान से जो फलप्राप्ति होती है वृक्षारोपण से भी उस फल की प्राप्ति अवश्य हो सकती है | महाभारत के शान्तिपर्व में कहा है की –'तस्या: पुत्रा: भवन्ति एते पादपा: नात्र संशय: |परलोकगत: स्वर्गे लोकन् चान्येति अपि अयान ||अर्थात् जो वृक्षारोपण करता है, उसके लिये वह वृक्ष पुत्र बनता है, उस वृक्ष के कारण ही वह स्वर्ग में जाकर अक्षय पुण्य का भोक्ता बनता है | अत: स्पष्ट कहा जाता है की प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में यहाँ संस्कृत सर्जकोंने वृक्षारोपण की भव्य प्रेरणा दी हैं | जिससे पृथ्वी को हरियाली, अभ्यारणवाली, हरितक्रांति तथा प्रदूषण रहित बना शके | वृक्षछेदन को देखकर संवेदनशील कवि ह्रदय व्यथित होकर धरती से पूछते है की

'यथा पल्लवपुष्पाढया यथा पुष्पफलध्धय: |
यथा फलद्धि स्वरोहा हा मात: क्वागमन द्रुमा: ||'

अर्थात जिसमें पतियाँ जितने पुष्प भी होते थे और ज्यादाह फलों से सराबोर होते हुए भी जिस पर चढने में कोई कठिनाई नहीं थी, है माता वे वृक्ष कहा गये ?

(4) पर्यावरण संरक्षण में वृक्षों का योगदान - वृक्ष केवल भूमि का श्वास नहीं है, अपितु प्राणीओं के मित्र तथा जीवनदाता भी है | संपत्ति या विपत्ति में प्राणीओं वृक्षों पर ही निर्भर रहेते हैं | परोपकारी वृक्षों का उत्तम कार्य वायुमंडल को संतुलित रखने का हैं | वृक्षों प्रकाश संश्लेषण की क्रिया दरमियान प्राणवायु बाहर निकलते है, अत: प्राणवायु आधारित जीवसृष्टि को योग्य मात्र में प्राणवायु मिल जाता है | सचमुच वायुमंडल की शुध्धि करनेवाले वृक्षदेवता हमारे लिए परोपकारी संत समान है | वैज्ञानिक अंक मुताबिक बाईस जितने वृक्षों में से मिलनेवाले प्राणवायु से एक व्यक्ति आजीवन श्वास ले सकती है | एक एकर में रोप

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

हुए वृक्षों से अठराह लोगों की प्राणवायु की जरुरत को पूरा किया जाता है| बिहार की राजधानी पटना में दीर्घकाल से जंगलों की सुरक्षा करनेवाली रचना (संस्था) 'तरुमित्र' के मुख्य फाधर रॉबर्ट कहते है की एक आदमी को जीने के लिए उसकी आसपास में १६ वृक्षों का होना जरुरी है | लेकिन भारतदेश में करीब ३६ लोग एक ही वृक्ष के सहारे जीते हैं | धुल और धूएँ को शोषने का काम भी वृक्षों का हैं | इस सन्दर्भ में पीपल का पेड़ ४१.५ प्रतिशत वायु को शोष लेते है | अशोक ४.५६ प्रतिशत, आम का पेड़ ४.५ प्रतिशत, कदंब ४.५७ प्रतिशत, बरगद का पेड़ ३.४५ प्रतिशत, बेर का पेड़ १.५४ प्रतिशत वायु और धुएं को शोषने की ताकात रखते है| पामवृक्ष को अत्यधिक वायुशोषक माना जाता है | लेडी पामवृक्ष वायुशोषक के साथ-साथ चींटियों-कीड़ों जैसे जंतुओं को भी शोषते है | नदी के किनारेवाला पामवृक्ष बाढ़ के पानी को भी शोष लेते है, अत: सामान्य बाढ़ की स्तिथि नियंत्रण में रहती है | नासा का सर्वेक्षण बताता है की घरो में वायुप्रदूषण फार्मेल्डीहाईड, एमोनिया, तथा बेन्जीन जैसे वायुओं को बढ़ने से फैलता है | इस आपत्ति से निपटने के लिए नासा का सुजाव है कि एरेका, पाम, लेडी पाम, बांस, रबर, ड्रेसियना, इंग्लिश आह्वी, डेट पाम, फाईकस ऐसी, बोस्टन फर्न और पीस लिली इत्यादी पेड़ों का संवर्धन करना चाहिए | जो इस प्रदूषण से संरक्षण करता है | पर्यावरण सरंक्षण में महत्व का योगदान देनेवाले वृक्षों में से कई वृक्षों का आलेखन निम्नालिखित है |

(A) नीमवृक्ष : (Nimb Tree) आयुर्वेद तथा चरकसंहिता आदि ग्रंथो में नीमवृक्ष का अधिक महत्व है | वैज्ञानिकों का मानना है कि नीमवृक्ष जमीन में नमी का संग्रह करता है| उससे जमीन में जलस्तर नियंत्रित रहता है | नीमवृक्ष की यह विशेषता उसको अन्य वृक्षों से सर्वोपरि घोषित करती है | इसके विपरीत युकेलिप्ट्स का पेड़ जमीन में से ज्यादातर पानी शोषता है, इसलिए उसके आसपास की जमीन सुक जाती है | वायुशोषक के रूप में दोनों वृक्षों को श्रेष्ठ माना जाता है | अकाल में नीमवृक्ष का आरोपण करने से वहाँ की जमीन उपजाउ और नमीयुक्त बनती है | इसलिए उसको जीवन प्रदायक वृक्ष माना जाता है | आयुर्वेदिक तथा गृहउपचार में नीमवृक्ष के भिन्न-भिन्न भागों का ज्यादा प्रयोग होता है | नीमवृक्ष को

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

एन्टीहेल्मिन्थिक, एन्टीफंगस, एन्टीबायोटिकल, एन्टी- बेकटेरियल, और सेडेटिव माना जाता है |

(B) अश्वत्थ (पीपल का पेड़) : Peepal Tree स्वर्ग के पारिजात, अशोक, मन्दार, कल्पवृक्ष आदि उत्तम वृक्षों को नंदनवन की शोभा मानी जाती है इस तरह पीपल का पेड़ पृथ्वी की शोभा है | प्राचीन ऋषिओंने उपनिषदों में उसको जिव और शिव का प्रतीक माना है | जैसे की –

“द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते |
तयोरन्यः पिप्पलं सयाद्वतिअनशन्न्यो: अभिचाकशीति ||”

पीपल का दैविक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एंव पर्यावरण की दृष्टिकोण से विलक्षण महत्व माना जाता है | स्कन्दपुराण के मतानुसार पीपल का सेवन सदा करना चाहिए किन्तु शनिवार के दिन उसकी पूजा अवश्य करनी चाहिए – ‘अश्वत्थो अत: सदा सेव्यो मंद्वारे विशेषत: |’ नित्यमश्वत्थ संस्पशति पाप क्षयं सहस्रधा ||’ (स्कन्दपुराण, ६/२४७/२८) संस्कृत में पीपल को अश्वत्थ कहा है, वैज्ञानिक परिभाषा में उसे फाईकस रिलीजिओसा कहते है | भारत देश में धार्मिक लोग पीपल को भगवान् विष्णु का प्रतिक मानते है | पीपल को देववृक्ष कहा गया है, क्योंकि उसका अनन्य महत्व है | गीता में भगवान् श्री कृष्ण इस वृक्ष को अपनी विभूति के रूप में आलेखते हुए कहते है कि ‘वृक्षाणा अश्वत्थ: अहम् |’ (श्रीमदभगवद गीता १०-२६) पर्यावरण संरक्षण में इस वृक्ष का स्थान सर्वोपरि है | यह वृक्ष दिवस दरमियान अधिक मात्रा में प्राणवायु बाहर निकलता है तथा रात्रि में अल्प मात्रा में अंगार वायु का उत्सर्जन करता है | शास्त्रीय परिभाषा में इस प्रक्रिया को क्रासलेसियन एसिड मेटाबोलिजम कहा जाता है | वैज्ञानिक सर्वेक्षण के आधार पर प्रमाणित हुआ है कि पीपल के पेड़ से प्रचुर प्रमाण में आयोसीप्रिन नाम का रासायणीक तत्व का उत्सर्जन होता है | अनेक प्रयोगों से प्रमाणित किया गया है कि ओजोन गैस के स्तर के विनाश की रक्षा के लिये पीपल के पेड़ों को लगाना कारगर (सटीक) समाधान है | पीपल के पेड़ के आसपास का वातावरण अत्यंत शुद्ध, सात्विक और स्वच्छ होता है यह निर्विवाद सत्य है | पीपल के पेड में भिन्न-भिन्न देवताओं का निवास होता है जैसे की –

Saarth
E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

'मुले विष्णु: स्थितो नित्यं स्कन्धे केशव: एव च |

नारायणस्तु शाखासु पत्रेषु भगवान् हरि|

फले अच्युतो न सन्देह: सर्वेदेवै: समन्वित: || (सक. पु. ६/२४७/३७)

(C) वटवृक्ष (बरगद) : Banyan Tree बरगद के पेड़ को संस्कृत साहित्य में 'वटवृक्ष' कहा जाता है | प्राचीनता की दृष्टिकोण से यह वृक्ष को कल्पवृक्ष का पूर्वज माना जाता है| यह वृक्ष सर्वाधिक सूर्य किरणों को शोषता है और प्राणदायक वायु प्रदान करता है | उसकी घोर छाया शीतलता तथा शांति प्रदान करती है | वायुमंडल को संतुलित करने में वटवृक्ष का बहोत बड़ा योगदान है | कई बिमारियों में उसका औषधीय उपयोग किया जाता है | वटवृक्ष की गणना औषिधिओं के रूप में होती है| स्कन्दपुराण के अनुसार उसके विभिन्न भागों में देवताओं का निवासस्थान है | जैसे की –

'तस्या: मूले विष्णु: स्थिते तत्उधर्व च पितामह: |

स्कन्धे च भगवान् रूद्र संस्थित: परमेश्वर: ||

शाखासु सविता प्रशाखासु देवता | पर्णषु देवा सन्ति च मरुतस्तथा |

प्रजानां पतय: सर्वे फलेश्वेव व्यवस्थिता: || (स्कन्दपुराण २-४-१२/२१-२३)

(D)तुलसी का पौधा – Basil - धार्मिक वृक्षों में तुलसी का स्थान विलक्षण है ऐसा माना जाता है कि जिस घर में तुलसी का पौधा है, वह घर साक्षात् तीर्थस्थान है तथा वहाँ यमदूत कभी प्रवेश नहीं करते है –

'तुलसीकाननं चैव गृहे यस्यावतिष्ठते |

तद्गृहं तीर्थभुत्तमाह नायन्ति यमकिंकरा ||'

दक्षिण भारत में गुडी पडवा के त्यौहार में इस पौधे कि पूजा होती है | प्रदूषित वायु के शुध्धिकरण में तुलसी का अनन्य योगदान है | तिरुपतिना एस. वी विश्व विध्यालय के अभ्यास मुताबिक तुलसी का पौधा उच्छ्वास में स्फूर्तिदायक ओजोन गेस छोड़ते है | कुदरती इलाज की कई पध्धतिओं में तुलसी का उपयोग होता है | तुलसी का संस्कृत नाम वृंदा है उसे शास्त्रीय परिभाषा में 'आकीममटेन्यु फलोरिमा' कहा जाता है | तुलसी में ओलियोनोलीक

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

एसीड, युसौलिक एसीड, रोस्मैरीनिक एसीड, युजेनोल, कार्वाक्राल, लिनालुल आदि तत्व पाये जाते है | जो उसके औषधीय गुणों को प्रकट करता है | तुलसी का सेवन अम्लता, पेचिश, संधिवात, जुकाम, नजला, सिरदर्द, आदि को मिटाता है | वैज्ञानिकों के मतानुसार तुलसी से केंसर जैसे असाध्य व्याधिओं का भी इलाज होता है | तुलसी को एन्टीओकसीडेंट, एन्टीबेक्टेरियल तथा एन्टीकेंसर माना जाता है | हमारे धर्म शास्त्रों में तुलसी, बरगद, पीपल, आंवले का पेड़, अशोक वृक्ष, आम का पेड़, बिल्व वृक्ष आदि को देवयोनी के वृक्ष माने जाते है | प्राचीनकाल में वृक्षों के प्रति अनन्य श्रध्धा और भक्तिभाव का दर्शन किया जाता था | कालिदास के मतानुसार मालविका के पादप्रहार से ही अशोकवृक्ष पुष्पित और फलवित होता था | आज भी कई स्थानों पर वृक्षों के साथ विवाह करने का रिवाज प्रचलित है | इस तरह वृक्षों का अनुपम महत्व है |

उपसंहार (Abstract) - वृक्षसम्पदा हरियाली का हेतु सौंदर्यवर्धक, स्वास्थ्यप्रद, औषिधिय गुणों के निधि, सुवृष्टि का मूल कारण, प्राणीओं के पोषक, रोगप्रतिकारक शक्तिवर्धक तथा रोग निवारक, पुष्टि, बल तथा आयुष्यवर्धक एवं पर्यावरण संरक्षण में अग्रेसर है | विश्व की अनुपम सृष्टि के परिपाचक यह वृक्ष फलागमन समये जुकने से मानव को विनम्ररहेने की शिक्षा देते है | इसलिए वृक्षों से नम्रता का पाठ पढना चाहिए | सचमुच वृक्षों हमें नम्रता, तितिक्षा, त्याग, परोपकार, आत्मसमर्पण आदि मानवीय गुणों की उन्नत शिक्षा प्रदान करते है | वृक्षशास्त्र में स्पष्ट निर्देश है की-

‘छायामन्यस्य कुर्वन्ति स्वयं तिष्ठीन्ति चातपे
फलन्ति हि परार्थे च सत्यमेते महाद्रुमा ||’

वृक्षों के विनाश से भूमिसंरक्षण की शक्ति शिथिल बनती है | अत: उसर – भूमि की वृध्धि होती है | अति हरे वृक्ष सूर्य की उपस्थिति में प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया से सुन्दर भोजन प्राप्त करते है, इसलिए उनका पोषण होता है, तथा प्राणीओं के लिए वे अन्नदाता बनते हैं | अंगार वायु उनका भोजन है, इसलिए पर्यावरण का संतुलन होता है | वृक्षारोपण से ही मानवीय दृष्टिकोण का विकास होता है | वृक्षों सभी प्राणीओं के लिए विश्रामस्थान तथा

Saarth
E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

वन्यजीवों के लिए प्रमुख आधार स्थान होते है | वृक्षों की सर्वांग संपूर्णता के लिए वैदिक साहित्य में उसे 'वन्यम – वनरक्षक' कहा गया है | वृक्ष छेदन को पापकर्म माना जाता है | उपनिषदों का यह वचन आज भी सार्थक है की वृक्षों को काटने से पूर्व दस बार सोचना चाहिए | तथा एक वृक्ष को काटने से पहेले अन्य दस वृक्षों का आरोपण तथा संवर्धन करना चाहिए | इस सिद्धांत के पालन से मानव और वृक्षों के बीच मधुर संबंध स्थापित होगा तथा उस में ही पर्यावरण का संरक्षण एंव संवर्धन समाविष्ट है | हमारे पूर्वज वृक्षों कों अधिक प्रीती से संवर्धित करके उसकी पत्तियाँ, फल, फुल और समिधाओं देवताओं को अर्पण करके स्वयं उपभोग करते थे | अत: इस प्रतिष्ठित यज्ञों से ही देवता प्रसन्न होकर सुंदरवर्षा से भूमि को हरियाली बना देते थे | आज हम लोग इस महान भावना को भूल गये है | अपने निजि स्वार्थ के लिये कुल्हाड़ी से वृक्षों को कट रहे है| लेकिन यह कुठाराघाट वृक्षों के मूल में नहीं अपितु हमारे पैरों में ही हो रहा है| आज हर आदमी अपनी कब्र स्वयं खोद रहा है| हमारी वनदेवी की कल्पना वास्तव में प्रकृतिदेवी के लिये ही है | अत: पर्यावरण संरक्षण के लिये वृक्षों और वनों की रक्षा करना मानवजाति का परमपवित्र कार्य है| यदि वृक्ष होंगे तभी तो जिव सृष्टि का अस्तित्व अखंड रहेगा नहीं तो असान्ति का साम्राज्य फेलता रहेगा |

संदर्भग्रंथ सूचि:

- व्यासप्रणित श्रीमदभगवदगीता (अध्याय १३-३,४. १०-२६)
- कलिदासविरचित अभिज्ञान शाकुन्तलम:
- स्कन्दपुराण: (६:२४७:२१, २:४:१२, ६/२४७/२८)
- ऋग्वेद (७:४:५, १०-१६४-२०) (५)
- यजुर्वेद (१६/१६/२०) * मुण्डकोपनिषद् (१-१)
- शिवपुराणउतरसंहिता (१२-१७) * वृक्षशास्त्र(६-२४७-२४)
- शिवपुराणउतरसंहिता (१२-१७)
- महाभारत शान्तिपर्व
- वाङ्मयविवेक (संशोधनलेख) वी.एस.डामोर २०१०\११
- सुरभारती संस्कृत महाविध्यालय पत्रिका, वड़ोदरा १९९९-२०००
- युगशक्ति गायत्री संपादक डॉप्रणव पंड्या वर्ष-४४, अंक-1

युगशक्ति गायत्री संपादक डॉप्रणव पंड्या वर्ष-४४, अंक-४,